Dr. Priti Ranjan
Deptt of History
H. D. Jain College
B.A Part - II
Paper - III
Topic - Chola Empire of Military organization.

Part - II

के चालुक्यों की ओर मुड़ा और बेलवारा के समीप विक्रमादित्य को परास्त कर कलिंग को रौंद डाला। तथा वेंगी के विजयादित्य VII को प्रतिष्ठित किया उसने विद्रोही केरल पाण्ड्य और सिंहलको को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।

चोलों की सबसे महत्वपूर्ण सामुद्रिक विजय → श्री विजय के शैलेन्द्र राजाओं पर थी। तमिल अभिलेख में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है श्री विजय एक महत्वपूर्ण सामुद्रिक राज्य था। इसके शासन के अंदर मालयप्रायद्वीप, सुमात्रा, और जावा और पोड़ीस द्वीप आदि थे। भारत और चीन के बीच के सामुद्रिक रास्ते पर इसके अधिकार थे।

यह कहना बड़ा कठिन है कि इस आक्रमण के पीछे चोल राजा का क्या उद्देश्य था? संभवतः इस विजय अभियान का प्रमुख उद्देश्य था कि श्री विजय पर प्रभुत्व स्थापित हो जाने से भारत को चीन जाने के लिए सामुद्रिक मार्ग भी प्राप्त हो जाता और चीन तथा भारत का सामुद्रिक व्यापार प्रारंभ हो जाता। दूसरा कारण यह था कि राजेन्द्र II दिग्विजय कर के सद्वीप-भूप्रदेशों के व्यापार पर नियंत्रण स्थापित करना चाहता था। और इस क्रम में राजेन्द्र ने सफलता प्राप्त की।

चूँकि राजा शैलेन्द्र मार्ग विजयोत्तुंग वर्मन का उत्तराधिकारी था, जिसने नारपट्टम में राजराज I के शासन के 21 वर्षों में एक बौद्ध विहार अनैमंगल नामक गाँव दान में दिया था। राजेन्द्र प्रथम ने इस दान को अपने शासन काल में वैधता प्रदान की थी, लेकिन इन दोनों राजाओं के बीच 1014-1025 के बीच मैत्रीशत्रुता की शुरुआत हुई। इन्हीं सब कारणों से राजेन्द्र प्रथम ने युद्ध किया। कारण जो भी रहा हो राजेन्द्र प्रथम का यह अभियान सफल रहा और उसने कदरम तथा राजधानी श्री विजय के ऊपर कब्जा कर लिया। कदर

राजा विजयविजयोत्तुंगवर्मन को बन्दी बना लिया गया। यह कहना बड़ा कठिन है कि कितने दिनों तक चोल का इस क्षेत्र पर अधिकार रहा। वीर राजेन्द्र ने भी कडारम के ऊपर आक्रमण किया था। तथा 1068 AD एक राजा को वहाँ की गद्दी पर बैठाया था।

(2) सामुद्रिक व्यापार

चोलों की नौसेना और जलबेड़े ने समुद्रीय व्यापार में उन्होंने काफी मदद की, उनका व्यापारी संबंध श्री विजय, फारस, चीन और अरब के साथ था। समुद्रीय व्यापार से चोलों की समृद्धि में काफी वृद्धि हुई।

श्री विजय के साथ चोलों का सम्बन्ध काफी दिनों तक कायम रहा और दोनों के बीच, (श्री विजय के साथ) काफी दिनों तक व्यापारी संबंध चलता रहा। दो विहार की स्थापना श्री विजय के द्वारा की गयी। सुमात्रा के तमिल अभिलेख से पता चलता है कि कई सदियों तक भारत और श्री विजय के साथ व्यापारी संबंध कायम रहा।

दसवीं सदी के अन्त में तथा ~~ग्यारहवीं~~ ग्यारहवीं सदी के शुरु में जब चीन की राजनीतिक स्थिति समान हुई, तो उस समय की सोंग सरकार ने विदेशी व्यापार पर ध्यान देना शुरु किया।

इसके लिए उसने विदेशी व्यापारियों को चीन बुलाने के उद्देश्य से विदेशों में मशीन भेजने का काम किया। चोलों ने इस अवसर का फायदा उठाया। चोल सम्राट 1016, 1034, 1036 ई० में विभागीय एवं व्यापारिक उद्देश्यों के पूर्ति के लिए अपना शिष्ट मण्डल भेजा। अन्त में 72 सौदागरों के दल को भी भेजा, व्यापार के वस्तुओं में कपूर, हाथी दाँत, सुगंधित धूप, सुहागा, लौंग, गुलाब पत्ती आदि प्रमुख थे। चीन से अधिक परिमाण में सोना भारत लाया गया।

चोल अभिलेखों में अरबों की अश्व सेना का महत्व और कुदीरैच सेट्टियों का उल्लेख मिलता है। यह सेट्टी घोड़ों का व्यापार करते थे। वे विशेष कर अरब से घोड़ा लेते थे और चोल राजकुमारों और सामंतों के यहाँ बेचते थे इस तरह देखते हैं कि चोलों का अरबों के साथ भी व्यापारिक संबंध था।

भारत में अरब घोड़ा का व्यापार दक्षिण भारत में चोलों के समय से शुरु हुआ इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता। पारस के खाड़ी के पूर्वी किनारे पर शिराफ नामक एक सर्वदेशीय (cosmopolitan) शहर स्थित था।

इब्न-हव-काल नामक एक समकालीन समकालीन अरब लेखक ने लिखा है कि 'शिराफ' इसी जगह पर था कि वहाँ 'शिराफ पर' आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता था तथा वहाँ की जलवायु भी अच्छा नहीं था। फिर भी यद्यपि हिन्द महा सागर चीन जावा मलाया के नाविक और व्यापारी वहाँ आते थे यह कहना गलत नहीं होगा कि भारतीय व्यापारी में चोल ही रहें होंगे।

कूटनीति संबंध

चोलों का चीन के साथ कूटनीति संबंध था, इस बात की पुष्टि चीन राजाओं द्वारा चीन भारत में भेज गए दूत मण्डली से होती है। राजराज I ने एक दूत मण्डल चीन भेजी थी। चाउ-जु-कुआ के अनुसार इस मण्डली के सदस्यों बहु-मूल्य उपहार के साथ चीन पहुँचे तथा उन्हें बड़ा सम्मान दिया गया। श्री राजेन्द्र चोल ने भी एक दूत मण्डल चीन भेजा था, जो 1033 ई० में चीन पहुँचा।

श्री विजय के साथ चोलो के राजनयिक संबंध की पुष्टि इस बात से ज्ञात होता है कि चोल राजा को कडरम के माँगों को निश्चित करने के लिए बुलाया गया था। कदरख कडरम के प्राप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है कि कंबोज राजा से राजेन्द्र I ने एक अनूठा पत्थर उपहार में पाया था। इस से सिद्ध होता है कि श्री विजय के साथ चोलों का राजनीतिक संबंध था।

कुलोत्तुंग के शासन काल में भी कंबोडिया I एवं बर्मा के साथ कूटनीतिक संबंध कायम रहा।

संस्कृतिक गतिविधियों

चोल साम्राज्य के संस्कृतिक गतिविधियो का अनुमान इसी से लगाया जाता है जहाँ आपस में उनके व्यापारिक और कूटनीतिक संबंध कायम हुई

वहाँ सँस्कृतिक आदान-प्रदान आवश्य हुआ होगा। प्रायद्वीप और श्री विजय और कथा के शैलेन्द्र राजा श्री राम विजयोतुंग-वर्मन द्वारा निर्मित नेगापट्टम के बौद्ध विहार को राजराज प्रथम (985-1014) ने एक गाँव दान दिया। चोल राजाओं ने भी शैलेन्द्र राजाओं से मित्रता स्थापित की। इसी क्रम में शैलेन्द्र राजाओं ने चोल राज्य के नेगापट्टम में एक बौद्ध विहार बनवाया।

निष्कर्ष

संक्षेप मे हम कह सकते है कि चोलों ने सामुद्रिक विजय, सामुद्रिक व्यापार कूटनीति और सँस्कृतिक क्षेत्र के संबंध मे काफी विकास किया। उनकी ये सारी सामुद्रिक उपलब्धियों के पीछे उनके द्वारा नौसेना और जलबेड़े के निर्माण का हाथ था। इन्हीं की बदौलत चोल एक सामुद्रिक शक्ति बन सके। उनकी इन्हीं सामुद्रिक गतिविधियों ने भारत में ही नहीं विदेशों में भी एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरने का मौका प्रदान किया।